- साहित्य कृतियों पर केंद्रित उद्भवकालीन फिल्में
- सिनेमा : समाज, साहित्य और संवेदना की सशक्त अभिव्यक्ति
- हिन्दी सिनेमा और राजपूत संस्कृति
- अंग्रेजी साहित्य कृति : द [illegible] और हिन्दी फिल्म [illegible]
- जीवन को परिभाषित करते हिंदी सिनेमा के सदाबहार गीत
- अनुनादन हिंदी फिल्मों में आध्यात्मिक [illegible]
- साहित्य समाज और हिन्दी सिनेमा

अनुक्रम

- हिन्दी फिल्मों में दलित
- हिंदी सिनेमा के अजरामर देश भक्ति पर गीत
- अनुनादन हिंदी फिल्मों में आध्यात्मिक [illegible]
- शतकीय हिंदी सिनेमा की [illegible] फिल्में
- सदी का हिंदी सिनेमा : सदाबहार कृतियाँ
- हिंदी सिनेमा की बुनियाद : हिंदी भाषा
- हिंदी सिनेमा : बदलते समय, बदलते नायक
- साहित्य कृतियों पर केंद्रित उद्भवकालीन फिल्में
- भारतीय हिन्दी सिनेमा का निर्माण कालीन परिवेश
- शतकीय हिंदी सिनेमा में दलित जीवन का चित्रिकरण
- श्याम बेनेगल निर्देशित चलचित्र 'समर' में चित्रित सामाजिक अवहेलना
- दलित जीवन पर आधारित फिल्मों का ऐतिहासिक अध्ययन
- हिंदी सिनेमा और गुलज़ार
- [illegible] पर केंद्रित उद्भवकालीन फिल्में
- हिन्दी फिल्मों में लोकगीतों का प्रभाव
- साहित्य समाज और सिनेमा
- साहित्य और सिनेमा : एक अद्भुत संगम
- साहित्य और हिन्दी सिनेमा : कथाकार प्रेमचंद के संदर्भ में

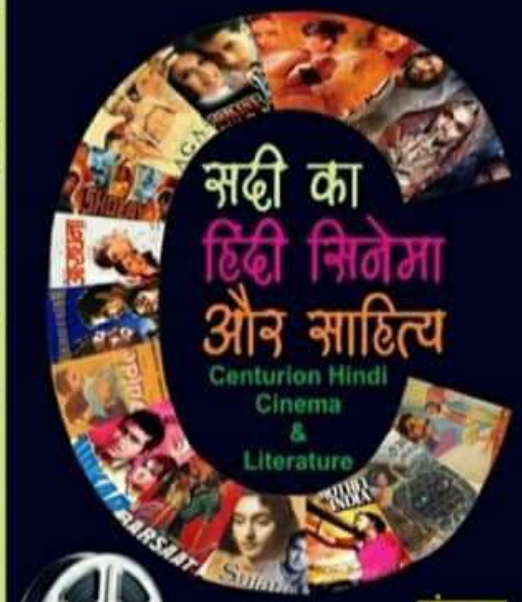

सदी का
हिन्दी सिनेमा
और साहित्य
(Centurian Hindi Cinema & Literature)

संपादक
प्रो. डॉ. शशिकांत 'सावन'
(डी.लिट्.)

माया प्रकाशन
कानपुर (भारत)

अनुक्रम

1. हिन्दी फिल्मों में दलित
   डॉ. इबरार खान
2. हिंदी सिनेमा के अजरामर देश भक्ति पर गीत
   धनश्री
3. अधुनातम हिंदी फिल्मों में अत्याधिक अ लीलता
   डॉ. दीपक विश्वासराव पाटील
4. शतकीय हिंदी सिनेमा की विकलांगताधिष्ठित फिल्में
   डॉ. शशिकांत 'सावन'
5. सदी का हिंदी सिनेमा : सदाबहार झांकियाँ
   प्रा. मुरलीधर वसावे
6. हिंदी सिनेमा की बुनियाद : हिंदी भाषा
   लारशा,
7. हिंदी सिनेमा : बदलते समय... बदलते नायक
   डॉ. सुमा. एस.
8. साहित्य कृतियों पर केंद्रित उद्‌भवकालीन फिल्में
   सरोज एम. बारीआ
9. भारतीय हिन्दी सिनेमा का निर्माण कालीन परिवेश
   जंबा एम. चौधरी
10. शतकीय हिंदी सिनेमा में दलित जीवन का चित्रिकरण
    डॉ. शशिकांत 'सावन'
11. श्याम बेनेगल निर्देशित चलचित्र 'समर' में चित्रित सामाजिक अवहेलना
    डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'

11

श्याम बेनेगल निर्देशित चलचित्र 'समर' में चित्रित सामाजिक अवहेलना

डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'

"उनकी (श्याम बेनेगल) की फिल्में मनुष्य की मनुष्यता को अपने मूल रूप में तलाशती हैं।" – स्वर्गीय इन्दिरा गाँधी

दादासाहब फालके पुरस्कार से सम्मानित श्री. श्याम बेनेगल जी ने हिन्दी चलचित्रों में बहुत बड़ा योगदान रहा है। आपने सत्तर के दशक से लेकर अब तक जो कलाकृतियाँ भारतीय चलचित्रों को दी हैं, वे अपने आप में अद्वितीय साबित हो चुकी हैं। वैसे तो समान्तर चलचित्र का आन्दोलन 1969 के मृणाल सेन निर्देशित चलचित्र 'भुवन शोम' से आरम्भ हुआ, किन्तु इस आन्दोलन में सबसे अधिक योगदान श्याम बेनेगल जी का ही है। आपके चलचित्र सृष्टि में किये अमूल्य योगदान के लिए आपको 1976 में पद्मश्री, 1991 पद्मभूषण, 2005 में दादासाहब फालके तथा 2015 में एएनआर राष्ट्रीय आदि अनेकों पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। आपके चलचित्रों में से लगभग सभी चलचित्रों को राष्ट्रीय पुरस्कार मिलना साधारण बात हो गयी है। सत्यजीत राय के बाद सम्पूर्ण विश्व के चलचित्रप्रेमियों को प्रभावित करने की असाधारण क्षमता केवल श्याम बेनेगल में ही है।

अंकुर (1974), चरणदास चोर (1975), निशान्त (1975), मन्थन (1976), भूमिका (1977), कोण्डूरा (1978), जुनून (1978), अनुग्रहम् (1978), कलयुग (1981), आरोहण (1982), मण्डी (1983), त्रिकाल (1985), सुस्मन (1987), अन्तर्नाद (1991), सूरज का सातवाँ घोड़ा (1991), मम्मो (1994), सरदारी बेगम (1996), द मेकिंग ऑफ महात्मा (1996), समर (1999), हरी–भरी (2000), जुबैदा (2001), नेताजी सुभाषचन्द्र बोस : द फॉरगॉटन हीरो (2005), वेलकम टू सज्जनपुर (2008), पोएट ऑफ पॉलिटिक्स (2010), वेल डन अब्बा (2010) इन चलचित्रों के साथ–साथ दूरदर्शन के लिए भी आपने निर्देशन का कार्य किया है, जैसे यात्रा (1986), कथा सागर (1986), भारत

: एक खोज (1988), अमरावती की कहानियाँ (1995), संक्रान्ति (1998) और संविधान (2014)।

"श्याम बेनेगल के चलचित्र अपने सामाजिक–राजनीतिक वक्तव्य के लिए अधिक जाने जाते हैं। स्वयं उन्हीं के शब्दों में – " राजनीतिक सिनेमा तभी पनप सकता है, जब समाज इसके लिए माँग करे। मैं नहीं मानता कि फ़िल्में सामाजिक स्तर पर कोई बहुत बड़ा बदलाव ला सकती हैं, मगर उनमें गम्भीर रूप से सामाजिक चेतना जगाने की क्षमता जरूर मौजूद है।" श्याम बेनेगल के चलचित्र भारतीय समाज की विसंगतियों को दर्शाते हैं। भारतीय समाज की सामाजिक संरचना में छिपे अन्याय, अत्याचार, अनाचार, अवहेलना को रेखांकित करना श्याम बेनेगल की सबसे बड़ी विशेषता है।

आलोच्य चलचित्र 'समर' 1999 में एनएफडीसीआय (भारतीय राष्ट्रीय चलचित्र विकास मण्डल) के बैनर तले बनी थी। प्रथम सहायक निर्देशक – मुनीश मलिक। कथा– हर्ष मन्दार। पटकथा एवं संवाद– अशोक मिश्रा। वेशभूषा– पिया बेनेगल। कला निर्देशक– समीर चन्दा। संकलन– असीम सिन्हा। संगीत– वनराज भाटिया। गायक– रामचरण यादव, राजन सिंह गुर्जर, सुनिधि चौहान, वीरेन्द्र सिंघल। ध्वनिमुद्रण– हितेन्द्र घोष। छायालेखक– राजन कोठारी। निर्माता समन्वयक– अनिल पण्डित। कार्यकारी निर्माता– राज पायस। निर्देशक श्याम बेनेगल। इस चलचित्र में राजेश्वरी सचदेव, किशोर कदम, रवि झांकल, रजित कपूर, रघुवीर यादव, सीमा विश्वास, दिव्या दत्ता, यशपाल शर्मा, सदाशिव अमरापुरकर, सरोज शर्मा, अनुपम श्याम, पुखराज मारू, राजकमल नायक, राकेश साहू, सन्तोष पाण्डे, नीरज जैन, राकेश सोनी, नीलेश मालवीय, सन्दीप श्रीवास्तव, गोपाल दुबे, जीतेन्द्र श्रीमाली, रविलाल संगरे, मुकेश नागर, इन्दल सिंह, प्रेमस्वरूप तिवारी, अर्चना चित्रांशी, श्याम मिश्रा, मनीषकुमार दुबे, शशिकान्त धिमोले, सुरेन्द्र सिंह राजन, ओम्प्रकाश राचरिया, पंकज तिवारी, मीना सिंह, अनहद बजाज, जगदीश शर्मा, कमल जैन, अमरसिंह लेहरे, रूवी भट्ट, अशोक मिश्रा, महेन्द्र जैन, चन्दन गोस्वामी, शेफाली नायक, शुभा नामदेव, शैलेश कटारे, वाहिद खान, अभय सिंह, पुष्पेन्द्र तिवारी, प्रतिभा जैन, जेम्स लॉरेन्स, मंगला लॉरेन्स, विजू सबलोग, टिना डिसुज़ा, जर्मन आर्य, मन्दिरा शुक्ल, केतकी अमरापुरकर, आनन्द कामत, हरिचरण, दिशी जैन, दीपाली, राजू, मोहम्मद भाई, मानस, अश्विन बलसावर, जनार्दन, रचना मारू, सुन्दरलाल आदि ने अभिनय किया था। इस चलचित्र को 1999 के राष्ट्रीय चलचित्र पुरस्कारों में उत्कृष्ट चलचित्र एवं उत्कृष्ट पटकथा के लिए पुरस्कार भी प्राप्त हुए थे।

इस चलचित्र की कहानी सुप्रसिद्ध समाज सुधारक श्री. हर्ष मन्दार के अंग्रेजी कहानी संकलन 'अनहर्ड वॉयसेस : स्टोरिज ऑफ फॉरगॉटन लाइव्ज' में संकलित सत्यकथाओं पर आधारित है। इस चलचित्र का विषय भारत की जाति व्यवस्था पर केन्द्रित है। इसके शिल्पपक्ष की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसमें 'चलचित्र में चलचित्र' इस प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

चलचित्र में चलचित्र का आरम्भ जमींदार के घर पुत्र उत्पन्न होने के उपलक्ष्य में बधाई गीत गाया जा रहा है। "बधाई बाजे नन्द घर महाराज! जाया यशोदा ने लल्ला मोहल्ला। में मच गयो है हल्ला।।" इस गीत के साथ ही दिल्ली के महाराज पृथ्वीराज चौहान और महोबा के वीरों आल्हा–ऊदल के युद्ध का वर्णन सुनाया जाता है। गीत सुनते समय अभिनेता किशोर (किशोर कदम) नथु की भूमिका में शराब पीकर नाचता है। नशे में ही घर पहुँच जाता है। दूसरे दिन अभिनेत्री उमा (राजेश्वरी सचदेव) नथु की पत्नी दुलारी की भूमिका में गाँव के कुँए पर पानी भरने जाती है तो ऊँची जाति के लोधी की औरत ठीक उन्हीं के समय कुँए पर पानी भरने आने से मना करती है। चाँदी के अलंकार को खो देती है। नथु की पत्नी उसे ढूँढकर देती तो है, पर उसके दाहिने हाथ पर निकले कोढ़ के दाग दिखाई देने से उसे घड़ा फेंक कर मारती है। खून से लथपथ दुलारी रोते रोते घर जाती है। दुलारी को घर में बन्द कर नथु जमींदार से न्याय माँगने के लिए निकल जाता है।

इस दृश्य को चित्रित करते समय किशोर को तकलीफ होती है तो निर्देशक कार्तिक अभिनेता नथु (रघुवीर यादव) की ओर संकेत करते हुए डाँटते हुए कहता है कि– 'जस्ट वॉच हिज पोस्चर ....हिज बॉडी लँग्वेज, दलित हो तुम, तुम्हें प्रॉब्लेम नहीं होनी चाहिए। दलित हो तुम। राइट।" जमींदार चमक सिंह की भूमिका करने वाला अभिनेता मुरली भी कहता है– "दलित हो तुम!" किशोर चीढ़ जाता है। इस बीच निर्देशक नथु को बताता है कि उसके कारण नहीं तो सिंचाई विभाग के अधिकारी के कारण पम्प लगा दिया है।

चलचित्र के क्रू मेंबर चित्रीकरण के बाद अपने हॉटेल लौटते समय बस में अन्ताक्षरी खेलते हैं। मुरली अन्ताक्षरी आरम्भ करते हुए किशोर को चिढ़ाने के लिए देवताओं के जयकार के साथ 'सारे दलित जनों की जय' भी कहता है। जिससे किशोर नाराज़ हो जाता है। उमा और अन्य साथी कलाकार भी अन्ताक्षरी में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते हैं। उमा अकेले बैठे

किशोर की सीट पर उसके साथ बैठ जाती है। दोनों में चर्चा होती है। जिसमें निर्देशक कार्तिक के द्वारा प्रयुक्त 'दलित बॉडी लैंग्वेज' को लेकर किशोर फिर से चीढ़ जाता है। उमा भी बताती है कि किशोर के दलित होने से उसे ही 'दलित बॉडी लैंग्वेज' अच्छी तरह से समझ में आ सकती है क्योंकि वह 'जन्मजात दलित' है। इस पर किशोर सवाल उठाता है कि "दलित इन्सान नहीं होते क्या ? क्या उनके सिर सर सींघ होते हैं क्या?" इस पर उमा उसे डाँटती है "इतना जज्बाती होने की क्या जरूरत है ?" बस से उतरने पर किशोर उमा से सवाल करता है कि "छोटी बात है उमा जी डायरेक्टर के लिए ए. सी. रूम, आप फ़िल्म की हीरोइन हैं आपके लिए ए. सी. रूम, यहाँ तक कि मुरलीसिंह चौहान की रूम भी ए. सी. और मैं इस फ़िल्म का हीरो हूँ मेरे लिए ए. सी. रूम नहीं, क्यों? क्योंकि किशोर तो दलित है उसके तो बाप–दादा गरमी में रह लेते थे, वह भी रह लेगा।" उमा उसे समझाती है कि "किशोर ऐसी बात नहीं है। हम जब यहाँ आये थे तो यहाँ तीन ही ए. सी. कमरे थे, आप बाद में आये, जैसे ही कोई ए. सी. कमरा खाली हो जायेगा आपको दिया जायेगा। इसमें इनइक्वीलिटीवाली कोई बात नहीं।" किशोर– "माफ़ कीजिएगा यह गलतफ़हमी आप पाले रहिये, मैं नहीं पालता। बाय।"

अगले दृश्य में निर्देशक कार्तिक मुरली को समझाता है कि "तुम अपने कैरेक्टर को इतना आऊटराइट विलैन क्यों बना रहे हो? डोण्ट मेक इट सो ब्लैक ऍण्ड वाइट! ओके?" मुरली– "सर! मिश्रा जी ने जैसे लाऊड डायलॉग लिखे हैं वैसे मैं बोल रहा हूँ।" कार्तिक– "तो डायलॉग के कॉंटेक्स्ट के ऊपर है न? उसे अलग–अलग तरीके से कहा जा सकता है न? वॉट्स योर प्रॉब्लेम?" तो मुरली कहता है– "आप सोचिए न बाकी के सभी कैरेक्टर्स को अपने–अपने ओरिजनल कैरेक्टर ऑब्जर्व करने का मौका मिला है। उमा के लिए दुलारीबाई है और किशोर के लिए यह नथु! लेकिन मैं किसे ऑब्जर्व करूँ? मेरे ओरिजिनल कैरेक्टर चमक सिंह को मरे हुए तो छह साल हो गये।" कार्तिक मुरली को चमक सिंह के बेटे रमेश सिंह (यशपाल शर्मा) और उसके परिवार से मिलकर उसके बाप की आदतों को जान लेने का सुझाव देता है।

इधर किशोर और उमा अपने संवाद रट रहे हैं। नथु उनकी कोशिश को देख रहा है। नथु कहता है कि "किशोर भैया तुमने हद कर दी आज। तुमने काहे नहीं बताया कि तुम हमारी ही बिरादरी हो? वो तो मुरली भैया ने हमको बताया नहीं तो हमें पता ही नहीं चलता कि तुम हमारी जात के

हो।" अपने संवाद याद करने के काम में खलल पड़ने की वजह से किशोर नथु को वहाँ से जाने के लिए कहता है। नथु अहिरवाल की भूमिका करते हुए किशोर को बार बार लग रहा है कि उसे कभी भुलाने नहीं दिया जा रहा है कि वह दलित है। उसपर ओम पुरी जैसे दलित हीरो का ठप्पा न लग जाये।

किशोर की सबसे बड़ी वेदना है कि "ऐसी सेन्सीबल फ़िल्में कौन देखेगा? डायरेक्टर तो अभी से लॉजिक दे रहा है कि ऐसी फ़िल्मों के लिए डिस्ट्रीब्युटर्स नहीं हैं हमारे देश में। रो रो कर बनेगी। 'कास्ट प्रॉब्लेम इन इण्डिया : अ ट्रू स्टोरी' के नाम पर फेस्टिवल में विदेश चली जायेगी। एक दो अवार्ड भी बटोर ले। कुछ हाय फ्लाईंग क्रिटिक्स देखेंगे। वॉट अ वण्डरफुल फ़िल्म! ब्युटीफुल!! यू आर वण्डरफुल वण्डरफुल!!! वाह वाह कर देंगे। दी एण्ड!!!!" उमा के पूछने पर किशोर कहता है कि " छला गया, धोखा खा गया। उमा जी मुझे डायरेक्टर ने मेरे टैलेण्ट को देखकर यह फ़िल्म ऑफर की है। बड़ी खुशी हुई थी। लेकिन यहाँ आने पर पता चला कि ये टैलेण्ट वेलेण्ट कुछ नहीं। यह रोल मुझे सिर्फ इसलिए दिया गया है कि मैं दलित हूँ। मतलब मैं कोई और रोल नहीं कर सकता। दलित हूँ इसलिए सिर्फ नथु ही कर सकता हूँ। अ सेन्सीबल फ़िल्म!"

इधर मुरली अपने कैरेक्टर चमक सिंह को समझने के लिए उसके बेटे रमेश सिंह के घर पर उमा को लेकर पहुँच जाता है। पर रमेश सिंह की शिकायत है कि उसके पिता को विलैन बना दिया है। फ़िल्म के अन्त में उसके पिता को नथु से पिटवायेंगे। पिता सामने रण्डी को नचवायेंगे। रमेश सिंह के गुस्से से परेशान होकर मुरली चमक सिंह की फोटो माँगता है। पर रमेश फोटो के स्थान पर दुनाली बन्दुक दाग देने को तैयार होता है। इतने में वहाँ उमा आ जाती है और रमेश से कहती है कि उसके पिता के बारे में कुछ गलत सलत न दिखायें इसलिए वे उनकी ओर आये हैं। रमेश बताने के लिए तैयार तो हो जाता है पर मुरली और उमा की जाति पूछता है। तब मुरली बताता है कि "मैं बिहार का राजपूत हूँ और ये हैं यू. पी. की पण्डित।" रमेश 1991 के प्रसंग के बारे में बताता है कि सरकार अहिरवाल दलितों की बदमाशी थी। जिन्होंने उसके गऊ समान पिता को अपमानित किया। केवल एक हैंडपम्प की खातिर उन्होंने जन्मभर के उपकारों और पुरानी परम्पराओं को भूला दिया। दद्दा ने फिर भी कहा जाने दो छोड़ दो। बाद में उनसे सम्पर्क भी नहीं रखा। वे स्वाभिमानी व्यक्ति थे। उमा रमेश की पत्नी से बातें कर रही होती है इतने में एक आदमी आकर डायरेक्टर साहब के बुलावे की सूचना देता है।

फिर से शूटिंग आरम्भ हो जाती है। गाँव के मजदूर चमक सिंह के घर जाकर सरकारी दर से दो रुपये कम मजदूरी माँगते हैं। पर चमक सिंह बना मुरली बीस या अठारह रुपये के स्थान पर तेरह रुपये देने के लिए तैयार हो जाता है। पर मजदूर नहीं मानते तब चकम सिंह कहता है कि हँडपम्प का पानी पिओ और मौज करो। खेती का काम मिलना बन्द हो जाने के कारण नथु बना किशोर दुलारी बनी उमा से बीड़ी बनाने का आग्रह करता है। पर वह कोड़ हो जान के कारण बीड़ी बनाने से इन्कार कर देती है। नथु बना किशोर अकेले में सबकी नज़र बचाकर मन्दिर में जाकर दुलारी के कोढ़ को ठीक करने की प्रार्थना करता है। यदि दुलारी ठीक हो जाती है तो मन्दिर के कलश पर झण्डा लगाने की मनौती भी माँगता है।

इधर चमक सिंह अपने घर से निकल कर बेदानी (दिव्या दत्ता) नामक नर्तिका–गायिका के पास जाता है। वह दो–चार रुपिया मजदूरी बढ़ाकर देने का आग्रह करती है। पर चमक सिंह नहीं मानता। दूसरे दिन मजदूर चमक सिंह के पास चौदह रुपिये में काम करने के लिए तैयार होने की बात बताते हैं, पर चमक सिंह बताता है कि अब उसे मजदूरों की आवश्यकता ही नहीं है। बाद में सारे मजदूर रामलाल के खेत में काम करने के लिए जाते हैं, पर चमक सिंह कहता है कि जरूर जाओ पर हमारे खेत में पाँव रखे बिना जाओ।

डायरेक्टर कार्तिक अग्रवाल के दुकान में शूटिंग करना चाहता है। प्रसंग है फ़िल्म का हीरो नमक खरीदेगा, बस इतना ही। कार्तिक के सामने ही अग्रवाल बनिया दलित स्त्रियों से रुपये लेकर चीनी उनके पहलू में फेंक कर देता है। कार्तिक पूछता है कि आपने दलित स्त्रियों के हाथों से पैसे तो सीधे ले लिये पर चीनी के पैकेट फेंक कर क्यों दिये? तो बनिया कहता है कि लक्ष्मी अपवित्र नहीं होती है। इतने में किशोर बनिये की दुकान से बीड़ी खरीदता है। किशोर को ऊँची जाति का अभिनेता मानकर बनिया उसे अपने हाथों से बीड़ी देता है। तो कार्तिक उसे किशोर के दलित होने की बात कहता है। अग्रवाल को यह बात मज़ाक लगती है वह किशोर को शहर का हीरो ही समझता है। कार्तिक और नथु हँस देते हैं।

उमा बीड़ी पीते किशोर के पास जाकर उसकी सुलगाई हुई बीड़ी पीना चाहती है। पर किशोर कहता है कि "मेरे हाथ की छुई हुई बीड़ी पीयेंगी तो अपवित्र हो जायेंगी आप!" उमा किशोर को परामर्श देती है कि "आप अपने रोल को अपने पर्सनल लाईफ से मत जोड़िये।" उमा और लोगों की तरह नहीं है, वह किशोर के हाथ से बीड़ी लेकर पीती भी है। पर खाँसने लगती है।

कार्तिक आटे की चक्की पर पहुँच जाता है जहाँ मालिक तिवारी उसे ठाकुरों और ब्राह्मणों के वैर की कहानी सुनाता है। आगे फ़िल्म में चमक सिंह बना मुरली तिवारी की आटा चक्की से मजदूरों को मारकर बाहर निकालता है। चमक सिंह नाई से कहता है कि दलितों में से किसी की भी दाढ़ी हजामत नहीं बनवाये। कोई भी गाय चराने वाला आदमी दलितों के ढोरों को नहीं चरायेगा। धानुकों को आदेश देता है कि कोई भी दाई दलितों के घर बच्चों को जनम देने में मदद नहीं करेंगी।

बीड़ी बनवानेवाला तेन्दु पत्ते का ठेकेदार मजदूरों से कहता है कि बीड़ी उद्योग पर संकट आ गया है इसलिए वह हज़ार बीड़ी बनाने के लिए दस रुपये की जगह आठ रुपये ही दे सकता है। पर चमक सिंह वहाँ आकर ठेकेदार को धमकाकर तेन्दु के पत्ते बेचने नहीं देता और दलित मजदूरों को मार–मारकर भगाता है। खुद सारे पत्ते खरीदता है। इधर खेती की मजदूरी और बीड़ी के लिए पत्ते न मिलने के कारण नथु बना किशोर सागर (मध्यप्रदेश का एक शहर) जाने के लिए तैयार होता है। वहाँ कोई न कोई काम मिल ही जायेगा। दुलारी बनी उमा उसे होली तक रूकने के लिए कहती है। पर वह मानता ही नहीं। साइकिल पर सवार होकर निकल जाता है।

होली के नृत्य में चमक सिंह को मजा नहीं आ रहा क्योंकि कोई दलित शराब पीकर नाचने ही नहीं आया। नथु के सागर से वापिस आने के प्रसंग का चित्रीकरण हो रहा है। डायरेक्टर कार्तिक किशोर को सूचना दे रहा है। नथु अपनी पत्नी दुलारी (सीमा विश्वास) को लेकर कार्तिक को बार बार विचलित कर रहा है। कार्तिक को नथु अपने ही घर से बाहर निकल जाने को कहने पर नाराज़ हो जाता है और कोई शूटिंग नहीं होगी, इस प्रकार का रूख अपनाता है। नथु के रूप में किशोर शहर की अगरबत्ती बनाने के कारखाने में काम करके दो सौ रुपये लाता है। किन्तु यह दो सौ रुपिये उसे अपने कारखाने के मालिक के बड़े भाई को जातिगत उतपीड़न के केस में फँसाने के कारण मिले हैं। पहले तो नथु इस केस के लिए तैयार नहीं होता पर दो सौ रुपयों के प्रलोभन से तैयार हो जाता है। नथु की रिपोर्ट पर कारखाने के मालिक के बड़े भाई अशोक कुमार को पुलिस पकड़ लेती है। पर नथु झूठे मुकदमे में फँस जाता है। वह घबराकर अपने मालिक को सच बताकर घर वापिस जाना चाहता है। पर मालिक उसे एक कमरे में बन्द करके रखता है। इधर गाँव में रामलाल के छोटी बेटी अपनी माँ का दूध न उतरने के कारण मर जाती है। एक डॉक्टर इस समाचार को पाकर

गाँव में आ जाता है। उसे लोगों से पता चलता है कि नथु की पत्नी दुलारी को कोढ़ हो गया है। डॉक्टर दुलारी के हाथ की अच्छी तरह से जाँच करता है। डॉक्टर दुलारी को समझाता है कि उसे कोढ़ नहीं इक्झिमा हुआ है। नीम के पत्ते और डॉक्टर की दवाई से एक सप्ताह में ही दुलारी का हाथ ठीक हो जाता है। इधर शहर में कैद नथु कमरे की छत को तोड़कर गाँव चला आता है। आते ही उसे पता चलता है कि दुलारी का हाथ ठीक हो गया है।

नथु के रूप में किशोर मनौती पूरी करने के लिए झण्डा लेकर चोरी छिपे मन्दिर में जाता है। पर प्रार्थना करते समय ही उसे लोगों की आवाज़े सुनाई देती हैं। जैसे ही वह घबराकर बाहर आ जाता है तो चमक सिंह के रूप में मुरली उसे पीटने लग जाता है। पंचायत में उसे सज़ा देने की ध मकी देता है। कार्तिक शॉट कट कर देता है। कार्तिक किशोर को समझाता है कि "किशोर रिमेम्बर टू रिमैन इन कैरेक्टर। नथु पहली बार मन्दिर में गया है। लेकिन तुम तो हर रोज मन्दिर में जाते हो ऐसी ॲक्टिंग कर रहे हो।" इतना चित्रीकरण होने के बाद सारे कलाकार हॉटेल न जाते हुए उसी गाँव में रुक जाते हैं। मुरली और अन्य लोग रमेश सिंह के घर में जाते हैं और किशोर को नथु के घर भेजा जाता है। पर मुरली उसे चीढ़ाता है। किशोर गुस्से में मुरली पर हमला कर देता है। बाकी के लोग दोनों में बीच बचाव करते हैं। किशोर हॉटेल जाने का निर्णय लेता है। जाने से पहले वह किशोर देखता है कि रमेश सिंह के घर मुरली और अन्य कलाकारों को पार्टी दी जा रही है। नौकर आकर समाचार देता है कि बेदानी नृत्य करने के लिए तैयार है। मुरली अपने दोस्तों के साथ मिलकर नृत्य में शामिल हो जाता है।

इधर नृत्य चल रहा है और उधर रसोई में उमा दुलारी के साथ खाने की बात कर रही है। नथु के घर दुलारी के हाथ से बना खाना खाते हुए उमा कहती है कि "औरत की कोई जाति नहीं होती। जाति तो मर्दों की ही होती है।" वैसे फ़िल्म में उमा दुलारी की भूमिका कर रही है और उसके जीवन को समझने के लिए उनके घर आई है। उमा के पूछने पर दुलारी बताती है कि हाथ में कोढ़ हो जाने के डर से एक बार वह हँसिया से अपना हाथ ही काटने निकली थी पर नथु ने बचा लिया था। नथु को भी गाँववालों की पत्थरबाजी के सपने आते थे।

दूसरे दिन नथु के रूप में किशोर को सज़ा देने के प्रसंग का चित्रीकरण होनेवाला है किन्तु किशोर इस सीन को शूट करने से मना कर

देता है। कार्तिक को पहले तो विस्मय हो जाता है। पर किशोर अड़ जाता है कि जब तक मुरली उससे माफ़ी नहीं माँगता वह शूटींग नहीं करेगा। कार्तिक मुरली को किशोर से माफ़ी माँगने के लिए कहता है। पर मुरली किशोर से अनमने ही माफ़ी तो माँगता है पर सज़ा के सीन को लेकर कठोर हो जाता है। सज़ा है चमक सिंह रूपी मुरली नथु रूपी किशोर के सिर पर पेशाब करे। किशोर मुरली के माफ़ी माँगने के बावजूद सज़ा के सीन को करने से मना कर देता है। 1991 में जो सज़ा मिली थी, उस सज़ा की जगह कोई और सज़ा देने के बारे में किशोर कार्तिक से विनती करता है। कार्तिक फ़िल्म के लेखक मिश्रा को कोई और सज़ा ढूँढने का आदेश देता है। नथु किशोर को समझाता है कि चित्रीकरण के समय नकली पेशाव होगी। उसने तो असली पेशाब को अपने सिर पर सहा है। उमा की विनती को भी किशोर ठुकराता है। कार्तिक मिश्रा को आदेश देता है कि वे युनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में जाकर मनुस्मृति जैसे धर्मग्रन्थों को खँगालकर कोई दूसरी सज़ा खोजकर लाये।

नथु कार्तिक से कहता है कि सज़ावाला सीन उससे करवाया जाये। इस बीच अगला सीन जिसमें नथु के रूप में किशोर गाँव से जंगल की ओर भाग जाने और दुलारी के रूप में उमा का उसे समझाना शूट किया जाता है। शॉट ओके हो जाता है। पर नथु इस सीन को ही गलत कह देता है। जब चमक सिंह से नथु की मुठभेड़ हुई थी, तब वह मरने के लिये नहीं भागा था। उसने तो सोचा था कि चकम सिंह उससे भी नीच है। उस समय नथु को ताकत मिली थी और उससे डर निकल चुका था। नथु बताता है कि इस प्रसंग के बाद उसने लोगों में जागृति बढ़ाई। डॉक्टर दुलारी का हाल पूछने आता है। तो वह अपने हाथ से ज्यादा अपने पति के सिर पर मूतने की समस्या की ओर ध्यान देने की बात कहती है। नथु की बिरादरी के सारे लोग चमक सिंह के खेतों में आग लगाना चाहते हैं। पर डॉक्टर उन्हें ऐसा करने से रोक देता है। नथु बताता है कि बस एक बार चमक सिंह के खिलाफ़ रिपोर्ट कर दी तो कानून उसे नहीं छोड़ेगा।

इधर मुरली अपने दोस्तों के साथ ताश खेलते हुए किशोर के वर्तन पर टीका करता है। मित्र बताते हैं कि एक सीन करने पर उसका नैशनल अवार्ड फिक्स हो जाता। पर मुरली कहता है कि "अबे! मत बोल, मत बोल नहीं तो हमारी सरकार अवार्ड में भी दलित रिज़र्वेशन रख देगी। " दोस्त बताता है कि "बँडीड क्वीन की तरह अवार्ड मिल जाता।' इस पर मुरली कहता है कि 'दलित का दिमाग तो रहेगा दलित ही। इसीलिए गुसाँई जी

ने कहा था– 'ढोल गँवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी।। '''

इधर किशोर और उमा में चर्चा हो रही है कि दलित की अवहेलना दिखाना क्यों ज़रूरी है? रोज पेपर में आता है, टी. वी. में आता है, उससे क्या फर्क आया है। दलित को लाचार और जुल्मों का शिकार दिखाने से वह और कमज़ोर हो जाता है। लोग यही समझते हैं कि दलित, गरीब और पिछड़े हुए अन्याय–अत्याचार सहने के लिए ही बने हैं।" उमा उत्तर देती है कि " यह तो हमारी कहानी का इण्टेशन नहीं था। हम तो वही दिखा रहे हैं, जो गाँवों में होता है।" किशोर प्रतिप्रश्न करता है कि, "और शहरों में नहीं होता? वह मुरली सिंह चौहान, वह तो शहरों में रहा है। उसके प्रेज्युडीज तो खतम नहीं हुए। उसका इण्टेशन है मेरे सिर पर पेशाब करने मुझे नीचा दिखाना। ऊँची जाति का होने का नशा। मगर यह ऊँची जाति है किस बात में ऊँची?" उमा कहती है कि "प्रेज्युडीज तो तुम्हारे भी खतम नहीं हुए। ऊँची जाति के बारे में वैसे ही सोचते हो जैसे कि सदियों से सोचा गया।" किशोर कहता है– "ऑफकोर्स! सदियों से अन्याय होते आया है उसका निशान मिटने में वक्त तो लगेगा ही।

जब शब्दों ने ही शब्दों को गुलाम बनाया था, तब की बात है।
पहाड़ों से, नदियों से, घाटियों से, झरनों से, खेत से, खेतियों से,
बाड़ियों खलिहानों से, घूमती फिरती आनेवाली सूर्य की कोमल किरणें
मेरे दर पर आकर ठिठक जाती दहलीज़ पर ही।
तब की बात है जब शब्दों ने ही शब्दों को गुलाम बनाया था।
पेड़ों से पत्तियों से फूलों से लताओं से घरों से खपरैलों से
छज्जों से बंगलों से झूमती झामती आनेवाली शीतल हरितिमाएँ
मेरी बस्ती से नाक मोड़ आगे बढ़ जाती थीं, तब की बात है।
जब शब्दों ने ही शब्दों को गुलाम बनाया था।
ठण्डी से हवा से धूप से बरसात से नभ से बादलों से
दूर दूर देशों से फड़फड़ाते कितने ही रंग–बिरंगी पंछी
मेरी बस्ती के करीब आती ही चौंच सिकोड़कर
भूर्र से उड़ जाते थे तब की बात है।
जब शब्दों ने ही शब्दों को गुलाम बनाया था। कविता।

कोई समीक्षक इस कविता को सुनकर क्या कहता मालूम है? अच्छी है काफी अच्छी दलित कविता है। हमारे यहाँ साहित्य में भी कास्टिज़्म होता है। दलित कविता सवर्ण कविता!"

अगले दृश्य में नथु के रूप में किशोर पुलिस थाने में चमक सिंह के खिलाफ़ रिपोर्ट लिखने जाता है। पर थानेदार मना कर देता है। मन्दिर में क्यों गया कहकर डाँटकर भगा देता है। वही थानेदार चमक सिंह के घर आकर सावधान कर देता है। बाद में नथु के रूप में किशोर कलेक्टर के ऑफिस में जाता है, पर कलेक्टर साहब नहीं मिलते। तब कानून जाननेवाले एक व्यक्ति के पास जाकर अपनी व्यथा बताते हैं तो वह कहते हैं कि "जो सिविल अधिकार संरक्षण अधिनियम 1955, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम 1948, बालश्रमिक अधिनियम 1985, अत्याचार निवारण अधिनियम 1989। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को कोई उसके घर और जमीन से बेदखल नहीं कर सकता। सज़ा हो जायेगी।" उस व्यक्ति की मदद से रिपोर्ट की जाती है। इधर गाँव में नथु के घर को जला दिया जाता है। दुलारी और बच्चे किसी तरह बच जाते हैं। नथु के रूप में किशोर वापिस आ जाता है। तब दुलारी सब कुछ बताती है।

डायरेक्टर कार्तिक लेखक मिश्रा के साथ टी. वी. पर दलितों पर हो रहे अतयाचारों का समाचार देखते हैं। मिश्रा जी बताते हैं कि, "मनुस्मृति के अनुसार अन्य जो दण्ड विधान हैं, उसका इस्तेमाल आप नहीं कर सकते। कानों में खौलता हुआ तेल डाल देना, विकलांग कर देना, होंठ कतर देना, गुप्तांगों का दहन। किशोर की दलित मेण्टैलिटी स्क्रिप्ट चौपट कर के रहेगी। देख लेना कार्तिक भाई।" इतने में नौकर समाचार लाता है कि सागर के डी. आई. जी. साहब (सदाशिव अमरापुरकर) आ रहे हैं। वे अपने बेटे पुनीत साथ आते हैं, जो छठी कक्षा में पढ़ रहा है। डी. आई. जी. बताते हैं कि जब उन्होंने यहाँ का चार्ज सम्भाला तो दलितों को कुँए से पानी भरने नहीं दिया जाता था। ऐसे में उन्होंने अत्याचार निवारण अधिनियम के बारे में समझाया और दलितों एवं सवर्णों में सुलह हो गयी। पर बाद में सवर्णों ने अपने लिए अलग से कुँआ बनावाया। डी. आई. जी. साहब अगले दिन कार्तिक के क्रू के कुछ खास लोगों को खाने का आमन्त्रण देते हैं।

डी. आई. जी. के घर खाने के समय 'शम्बुक वध प्रसंग' की चर्चा छिड़ जाती है। मुरली कहता है– " सरासर शम्बुक की गलती थी। जब तय था कि दिमाग वाला दिमाग का काम करेगा, तलवारवाला तलवार का और झाड़ूवाल झाड़ू का! तो शम्बूक को क्या खुजली हुई थी कि वह तप करने बैठ गया।" डी. आई. जी. बताते हैं कि, "पूर्वग्रह, हरेक का एक दूसरे के बारे में पूर्वग्रह। पूर्वग्रह हर जात में। पर मजे की बात यह है कि पूर्वग्रह की कोई जाति नहीं होती है। ये चश्मे पहनना बड़ा आसान है, उतारना

बहुत मुश्किल। " इतने में उनका बेटा रोते हुए आता है और माँ से पूछता है "माँ क्या पिताजी चमार हैं? स्कूल में मेरे दोस्त कहते हैं कि तेरे पिताजी चमार हैं।" डी. आई. जी. साहब बेटे को बुलाकर पूछते हैं कि, "तेरे पिताजी चमार हैं, इसमें रोने की क्या बात है। कोई ठाकुर कहता तो रोते, नहीं न! तो चमार कहने पर क्यों रो रहे हो? बेटे तुम अपने आपको जो बनाओगे, वही तुम होगे। मेरे पिता चमार थे, लेकिन आज मैं क्या हूँ? तो मैंने अपने आपको बनाया।"

फिल्म के अगले दृश्य में कमिशनर साहब के घर नथु बना किशोर अपने बिरादरी के लोगों के साथ आन्दोलन पर बैठे हैं। कमिशनर का पी. ए. उन्हें समझाता है और जनसुनवाई के समय मौजुद रहकर अपनी समस्या बयान करने को कहता है। चमक सिंह जनसुनवाई के समय उपस्थित नहीं रहता जंगल में भाग जाता है। कमिश्नर साहब सभी लोगों की शिकायतें सुनते हैं और चमक सिंह को पकड़ने का आदेश देते हैं। लोगों को मार्गदर्शन करते हुए कहते हैं कि, "हिंसा का सहारा मत लो।"

फिल्म का क्रू वापिस जाते समय नये सरपंच सभी फुलमालाएँ पहनाकर विदा करना चाहते हैं। एक माला कम पड़ जाती है और किशोर अपनी माला मुरली को पहनाना चाहता है। किन्तु वह स्वीकार नहीं करता। तो नथु कह देता है –

"जाको जौन स्वभाव न बदलो, जाय किसी से।
और नीम न मीठी खाओ कितनी भी गुड़ घी से।।"

संक्षेप में कहा जाये तो श्याम बेनेगल निर्देशित 'समर' चलचित्र में समाज के पूर्वग्रह को बदलने की क्षमता अवश्य है। सभी सुधिजनों से अनुरोध है कि वे स्वयं इस चलचित्र को देखें और अपने बच्चों को अवश्य दिखायें।

संदर्भ

1) यू–ट्युब पर प्रसारित चलचित्र 'समर – द कॉन्फ्लीक्ट'
2) श्याम बेनेगल – विकिपेडिया
3) श्याम बेनेगल – भारतकोश
4) श्याम बेनेगल : एक दुनिया समानान्तर – वेबदुनिया

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय, उस्मानाबाद
(महाराष्ट्र)